28 भारत में धर्मनिरपेक्षता (Secularism in India)

परिचय (Introduction)

धर्मनिरपेक्षता आधुनिक समाज की एक केंद्रीय विचारधारा (Ideology) है जो सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को तर्क एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर धर्म के अवैज्ञानिक प्रभाव के उन्मूलन पर बल देती है। विचारधारा पर आधारित इस परिवर्तन की प्रक्रिया को धर्मनिरपेक्षीकरण के रूप में जाना जाता है। ब्रायन आर. विल्सन के अनुसार धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया परिवर्तन की ऐसी प्रक्रिया को इंगित करती है जिसके अंतर्गत विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ धार्मिक अवधारणाओं की पकड़ या प्रभाव से बहुत हद तक मुक्त हो जाती हैं। इस तरह धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत प्रतिदिन के जीवन पर धार्मिक नियंत्रण का कम होना, धार्मिक विश्वासों के प्रति विरोधात्मक स्थितियों (Adversarial Situation) का विकास और कर्मकाण्डीय प्रक्रिया (Ritualistic Process) का तर्क द्वारा स्थानापन्न किया जाना, शामिल किया जाता है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के निम्नलिखित लक्षणों की चर्चा की जा सकती है:–

1. धर्म निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया में विचार स्वतंत्रता एवं तर्कयुक्त चिंतन पर जोर दिया जाता है।
2. इस प्रक्रिया के अंतर्गत अलौकिक एवं अधिप्राकृतिक सत्ता का विरोध तथा इहलौकिकता में विश्वास बढ़ता जाता है और लोग भौतिक जीवन की प्रगति में अधिक विश्वास करने लगते हैं।
3. इस प्रक्रिया के तहत जगत के अध्ययन एवं जीवन की समस्याओं के समाधान में धर्म के प्रति उदासीनता और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भरता बढ़ती जाती है तथा मानव जीवन के अध्ययन एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु तार्किक एवं वैज्ञानिक सिद्धांतों में विश्वास धार्मिक विश्वासों पर आच्छादित हो जाता है।
4. इस प्रक्रिया का एक प्रमुख पहलू धर्म का धर्मनिरपेक्षीकरण है जिसके अंतर्गत सभी धर्म अपने सिद्धांतों व व्यावहारिक प्रक्रियाओं को अपने सदस्यों की बदलती आवश्यकताओं एवं समाज की बदलती स्थिति के अनुरूप ढाल लेते हैं। यूरोप में प्रोटेस्टेंटवाद का विकास या फिर आधुनिक धार्मिक संस्थाओं द्वारा आधुनिक अस्पतालों, धर्मनिरपेक्ष शिक्षण संस्थानों आदि का संचालन इस प्रक्रिया को परिलक्षित करते हैं।

धर्मनिरपेक्षता का उद्भव (Emergence of Secularism)

धर्मनिरपेक्षता का उद्भव यूरोप के दैनिक जीवन में प्रभावी धर्म या चर्च के प्रभाव के उन्मूलन के रूप में हुआ माना जाता है। मध्यकाल का यूरोपीय समाज एक धर्म प्रधान समाज था और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म का प्रभाव प्रबल था। 13वीं – 14वीं सदी तक आते-आते धर्म और राज्य के बीच गठबंधन ने धर्म के अंतर्गत अनेक रूढ़ियों एवं कुरीतियों (Stereotypes and Vices) को विकसित किया जो राज्य और धर्म द्वारा किए जाने वाले शोषण को वैधता प्रदान करती थीं।

यूरोप के सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म के इसी प्रभाव के उन्मूलन के रूप में धर्मनिरपेक्षता एवं धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया का उद्भव हुआ, जिसके लिए निम्नलिखित घटनाओं को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है:–

1. पुनर्जागरण (Renaissance) आंदोलन ने तर्कसंगत ज्ञान के महत्त्व में वृद्धि को संभव बनाया। फलत: कला एवं ज्ञान के प्रति रुचि व तर्कसंगत खोज के साथ ही ज्ञान के क्षेत्र में पुनर्व्याख्या एवं आलोचना का दौर आरम्भ हुआ। छापेखाने के आविष्कार के कारण इन विचारों की जन सामान्य के लिए सरलता से उपलब्धता संभव हो सकी और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बल मिला।
2. यूरोप की वैज्ञानिक क्रांति ने तर्कसंगत, पद्धतिबद्ध तथा प्रयोगसिद्ध ज्ञान के महत्त्व में वृद्धि को संभव बनाया। फलत: इस ज्ञान के आधार पर विश्व संबंधी पूर्व पारलौकिक व्याख्याओं एवं धारणाओं को चुनौती मिली, जिससे धर्म के प्रभाव में कमी आयी। इस क्रांति से मनुष्य का विश्व और प्राकृतिक जगत के बारे में वस्तुनिष्ठ एवं तर्कसंगत ज्ञान में वृद्धि हुई और इस संदर्भ में धर्म पर निर्भरता में कमी आई।
3. सोलहवीं सदी में ईसाई धर्म के अंतर्गत सुधार आंदोलन द्वारा ईसाई धर्म में विद्यमान मध्ययुगीन कुरीतियों को समाप्त करने व बाइबिल के अनुरूप सिद्धांतों तथा रीतियों (Rituals) के पुनर्स्थापना पर बल दिया गया तथा इन सिद्धांतों एवं रीतियों को प्रोटेस्टेंटवाद नाम दिया गया। प्रोटेस्टेंटवाद ने ईश्वर को व्यक्तिगत बना दिया और व्यक्तिगत सांसारिक क्रिया को ईश्वर की आस्था के प्रतीक के रूप में प्रोत्साहित करके धर्म को अधिकाधिक व्यावहारिक एवं तर्कसंगत बनाने का प्रयास किया।
4. यूरोप में होने वाले व्यापार एवं वाणिज्य के विकास तथा औद्योगिक क्रांति के कारण मध्यम वर्ग का विकास संभव हुआ। इस मध्यम वर्ग ने अपने अस्तित्व को स्थापित करने की प्रक्रिया में धर्म आधारित परंपरागत विचारधारा एवं व्यवस्था का विरोध किया। साथ ही, औद्योगीकरण ने व्यक्ति को विवेकसम्मत आर्थिक क्रियाओं की ओर प्रेरित कर समाज को अधिकाधिक तर्कसंगत बनाने का प्रयास किया।
5. ब्रायन विल्सन ने अपनी पुस्तक में साम्यवाद जैसी विचारधारा और ट्रेड यूनियन जैसे संगठनों के विकास को भी

धर्मनिरपेक्षीकरण के उद्भव के कारण के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने यह दर्शाया है कि इस विचारधारा और ऐसे संगठनों के विकास ने धार्मिक व्याख्याओं को चुनौती दी और समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करके तर्कसंगत विचार और विश्व दृष्टि के विकास में सहायता पहुंचायी है।

स्पष्ट है यूरोप में धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया एक लंबी, जटिल एवं ऐतिहासिक घटना है जो कई तत्त्वों का संयुक्त परिणाम रही है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता (Secularism in India)

धर्मनिरपेक्षीकरण से तात्पर्य सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म के प्रभाव की उन्मूलन की प्रक्रिया से है और इस अर्थ में धर्मनिरपेक्षीकरण का उद्भव यूरोप में संभव हुआ जो धीरे-धीरे आधुनिकीकरण (Modernization) के एक घटक के रूप में आज दुनिया के सभी समाजों में क्रियाशील है, परंतु भारत में धर्मनिरपेक्षता एक गतिशील अवधारणा रही है। भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता को एक जीवनशैली के रूप में स्वीकार किया गया है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग स्वतंत्रता समानता एवं सहिष्णुता की भावना के आधार पर बिना एक दूसरे के परंपरागत विश्वासों में बाधा उत्पन्न किए, ऐसे कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की स्थापना करे, जिसमें राज्य का अपना कोई धर्म न हो और उसके लिए सभी धर्म समान हों।

इस रूप में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संविधान द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया, जिसके तहत संवैधानिक रूप से राज्य किसी विशिष्ट धर्म से संबंधित नहीं है और राज्य तथा धर्म के बीच पृथकता विद्यमान है। भारत में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में धर्मनिरपेक्षता के लक्षणों को निम्न बिंदुओं के अंतर्गत देखा जा सकता है:-

भारत में धर्मनिरपेक्षता के लक्षण (Characteristics of Secularism in India)

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत के लिए पंथनिरपेक्ष / धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा की गयी है।
2. राज्य किसी धार्मिक समुदाय पर अपनी संस्कृति नहीं थोपेगा और कोई भी धर्म या समुदाय स्वेच्छापूर्वक अपने शिक्षण संस्थान को स्थापित करने में स्वतंत्र होंगे (अनुच्छेद 30)।
3. राज्य द्वारा सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थान से धर्म पृथक होगा (अनुच्छेद 28)।
4. राज्य किसी के धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेगा (अनुच्छेद 26, 27)।
5. सभी को अपने धर्म के पालन की स्वतंत्रता है (अनुच्छेद 25)।
6. संविधान के समक्ष सभी समान है और राज्य बिना किसी भेदभाव के सभी को अवसर की समानता उपलब्ध करता है (अनुच्छेद 14 से 18)।
7. भारत का अपना कोई राज्य धर्म नहीं है और संवैधानिक रूप से भारत राज्य किसी विशिष्ट धर्म से संबंधित नहीं है।

एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में भारत (India as a Secular State)

एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में भारत की प्रकृति को दो स्वरूपों के संदर्भ में समझा जा सकता है।

सैद्धांतिक स्वरूप

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया गया, जिसका तात्पर्य है कि सैद्धांतिक रूप से भारतीय राज्य किसी विशिष्ट धर्म से संबंधित नहीं है और राज्य तथा धर्म के बीच पृथकता, भारतीय संविधान की प्रस्तावना में पंथनिरपेक्ष राष्ट्र की घोषणा और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 25, 26, 27, 28, 30 में निहित प्रावधान इस बात की पुष्टि करते हैं।

व्यवहारिक स्वरूप

सैद्धांतिक रूप से धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के बावजूद भारत में धर्मनिरपेक्षता का व्यवहारिक स्वरूप सैद्धांतिक स्वरूप से भिन्न प्रतीत होता है, जैसे:-

1. सरकार द्वारा अल्पसंख्यक धर्म की शिक्षण संस्थाओं को अनुदान दिया जाता है।
2. अल्पसंख्यकों द्वारा धर्म के आधार पर विशेष सुविधाओं की माँग की जा रही है और कुछ राज्यों द्वारा इन्हें प्रदान भी किया जा रहा है।
3. आज तुष्टीकरण (Appeasement) की नीति के तहत चुनावी लाभ प्राप्त करने के लिए कुछ धार्मिक समूहों को धर्म के नाम पर विशेष सुविधा प्रदान की जा रही है।
4. राजनीतिक दलों द्वारा धर्म को आधार बनाकर मतों को लामबंद करने का प्रयास किया जा रहा है।
5. आज भारत में समान नागरिक संहिता का अभाव और अलग-अलग व्यक्तिगत कानूनों का प्रावधान किया गया है।
6. राज्य और धर्म में वैधानिक पृथकता के बावजूद सरकार या राज्य द्वारा किसी धार्मिक समुदाय विशेष पर समाज कल्याण के नाम पर धन खर्च किया जाता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि भारत में धर्मनिरपेक्षता के सैद्धांतिक व व्यवहारिक स्वरूप में कुछ ऐसे विरोधाभास परिलक्षित होते हैं, जो भारत की धर्मनिरपेक्ष राज्य की प्रकृति पर प्रश्न उठाते हैं और इसी आधार पर भारतीय धर्म-निरपेक्षता की आलोचना की जाती है और कुछ विद्वानों द्वारा यहाँ तक कहा जाता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं है। परंतु यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि कोई भी धर्मनिरपेक्ष राज्य या समाज एक आदर्श-प्रारूपी (Ideal - Model) अवस्था है जिसकी प्राप्ति किसी भी आधुनिक राज्य या समाज का प्रमुख लक्ष्य होता है। चूंकि राज्य समाज के अनुरूप होता है और जब तक भारत के संपूर्ण समाज में धर्म का प्रभाव व्याप्त है तब तक भारतीय राज्य से पूर्ण धर्मनिरपेक्षता की अपेक्षा करना तर्क संगत नहीं हैं। भारत

एक बहुलक समाज (Puluralistic Society) है जहाँ विभिन्न धर्म, संप्रदाय, भाषा, नृजातीयता आदि को मानने वाले लोग रहते हैं। एक संघ के रूप में भारत का निर्माण अमेरिका की तरह इकाईयों की इच्छा का परिणाम नहीं है, बल्कि यहाँ भारतीय संघ द्वारा इसकी इकाईयों को संगठित किया गया है। इसलिए भारत सरकार द्वारा विविधता में एकता के आदर्श को अपनाते हुए सभी धार्मिक एवं नृजातीय समुदाय (Ethnic Community) को उनकी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए राष्ट्र की मुख्य धारा में एकीकृत करने का आश्वासन दिया गया है और यह बात भारत सरकार द्वारा अपनाए गए धर्मनिरपेक्षता के स्वरूपों से भी परिलक्षित होती है जो यूरोपीय प्रतिरूप से भिन्न है। इसलिए भारत व्यवहारिक क्रिया-कलापों में धर्मनिरपेक्षता के सैद्धांतिक आदर्शों से कहीं-कहीं विचलित प्रतीत होता है। अत: निष्कर्ष है कि भारत को एक पूर्णत: धर्मनिरपेक्ष राज्य भले न कहा जाय, परंतु इसे एक ऐसे धर्मनिरपेक्ष राज्य की संज्ञा अवश्य दी जा सकती है जो राज्य रूपी संस्थागत साधनों की मदद से लोगों की धार्मिक भावनाओं को महत्त्व देते हुए एक धर्मनिरपेक्ष समाज के आदर्श प्रारूप के स्वरूप की प्राप्ति की ओर निरंतर अग्रसर है, साथ-साथ इस प्रक्रिया में वह अपने बहुलक चरित्र को भी बनाए रखना चाहता है। इसी कारण वैधानिक रूप से धर्मनिरपेक्ष राज्य होते हुए भी इसकी गतिविधियाँ कुछ मामलों में धर्म से जुड़ी प्रतीत होती हैं।

भारत में धर्मनिरपेक्षीकरण का सामाजिक प्रभाव
Social Consequences of Secularism in India

ऐतिहासिक रूप से भारतीय समाज एक धार्मिक समाज रहा है जहाँ सामाजिक जीवन के सभी पक्ष धर्म के इर्द-गिर्द संगठित थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आधुनिक समाज के लक्ष्य को स्वीकार किया गया और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के तहत राज्य द्वारा अपने आप को धर्म से पृथक करते हुए आधुनिक शिक्षा, संवैधानिक प्रावधान आदि के माध्यम से भारतीय समाज को एक धर्मनिरपेक्ष आधुनिक समाज के रूप में बदलने का प्रयास किया गया है। पिछले 63 वर्षों से भारत में क्रियाशील धर्मनिरपेक्षीकरण की इस प्रक्रिया ने धर्म प्रधान भारतीय समाज के सभी पक्षों में कई परिवर्तनों को संभव बनाया है, जैसे:-

1. भारतीय समाज में विश्व एवं समाज के बारे में प्रचलित धार्मिक दृष्टिकोण कमजोर हुआ है तथा तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ है और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्मनिरपेक्ष संस्थाओं के निर्माण के साथ धर्म का प्रभाव क्षेत्र सीमित हुआ है। आज लोगों में पवित्रता और अपवित्रता (Purity and Pollution) की धारणा कमजोर हुई है और भारतीय लोग अपनी सोच व गतिविधियों में अधिकाधिक लौकिक हुए हैं।
2. धर्म आधारित परंपरागत समाज के दार्शनिक आधार जैसे पुरुषार्थ, आश्रम व्यवस्था, कर्म व पुनर्जन्म का सिद्धांत, संस्कार, यज्ञ एवं ऋण की धारणा आदि आज महत्त्वहीन होते जा रहे हैं।
3. आज जाति व्यवस्था का धार्मिक आधार कमजोर हुआ है फलत: जाति व्यवस्था में निहित अस्पृश्यता, निर्योग्यता एवं विशेषाधिकार, जन्मजात पेशा, प्रदत्त प्रस्थिति, (Ascribed Status) खान-पान संबंधी प्रतिबंध, सांस्कारिक सोपान आदि का महत्त्व घटा है और आज जाति व्यवस्था मुख्यत: लौकिक आधार पर अपनी निरंतरता बनाए हुए है।
4. आज भारतीय स्तरीकरण व्यवस्था धार्मिक आधार पर निर्मित जाति स्तरीकरण से लौकिक आधार पर निर्मित वर्ग स्तरीकरण के रूप में परिवर्तित हो रही है फलत: जहाँ सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि और निम्न जातियों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, वहीं जाति प्रतिस्पर्धा, तनाव एवं संघर्ष में भी वृद्धि हुई है।
5. धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया ने परंपरागत शक्ति संरचना में उच्च जातियों के महत्त्व को कमजोर करके और निम्न व मध्यम जातियों को राजनीतिक व आर्थिक शक्ति प्रदान करके शक्ति संरचना (Power Structure) में उन्हें उभरने का मौका दिया है, फलत: ये जातियाँ अनेक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक एवं प्रशासनिक पदों पर काबिज होकर अपने प्रस्थिति उन्नयन (Status Upgrade) में सफल हुई हैं।
6. आज भारत में विवाह का सांस्कारिक पक्ष कमजोर हुआ है और आज लोग विवाह धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए नहीं कर रहे हैं। नातेदारी संबंधों में भी पति-पत्नी, माता-पिता, पिता-पुत्र, पुत्र-पुत्री आदि एक दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन धार्मिक कर्त्तव्यों के रूप में न करके लौकिक आधार पर करते हैं। आज भारतीय स्त्रियों में अपने पति को परमेश्वर मानने की धारणा कमजोर हुई है फलत: जहाँ एक ओर महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार हुआ है तो दूसरी तरफ परिवारिक तनाव एवं विघटन में भी वृद्धि हुई है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज में विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया है और आधुनिकता की दिशा में सामाजिक परिवर्तनों को संभव बनाया है, परंतु अभी भी हम अपेक्षित लक्ष्य से दूर हैं। हाल के वर्षों में वैश्वीकरण जनित पहचान के संकट से उत्पन्न प्रतिक्रियात्मक चेतना, (Reactive Consciousness) धार्मिक रूढ़िवाद एवं सांप्रदायिक तनाव, धर्म का बाजारीकरण, कुछ व्यक्तियों या समूहों द्वारा अपने स्वार्थों को सिद्ध करने हेतु धर्म का प्रयोग आदि के परिणामस्वरूप भारत में धर्मनिरपेक्षीकरण की यह प्रक्रिया कमजोर हुई है फलत: सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों में धर्म का अवैज्ञानिक प्रभाव पुन: दृष्टिगत होने लगा है। अत: इन नवीन प्रवृत्तियों एवं समस्याओं के समाधान द्वारा ही धर्मनिरपेक्षीकरण की इस प्रक्रिया को क्रियाशील रखा जा सकता है और इसके माध्यम से आधुनिक समाज के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

धर्मनिरपेक्षीकरण की समकालीन चुनौतियाँ
Contemporary Challenges of Secularization

हालांकि धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कभी भी निर्बाध नहीं रही है परंतु हाल के वर्षों में देखा जाए तो यह प्रक्रिया लगभग सभी देशों में कई चुनौतियों का सामना कर रही है। भारत के संदर्भ में देखा जाए तो निम्न चुनौतियों की चर्चा करना प्रासंगिक होगा–

1. धार्मिक रूढ़िवाद और धार्मिक पुन: प्रवर्तनवाद (Religious Fundamentalism and Religious Revivalism) समकालीन विश्व की प्रमुख घटनाएँ हैं जो भारत में भी धर्मनिरपेक्षीकरण की वर्तमान प्रक्रिया के सामने प्रमुख चुनौती प्रस्तुत कर रही है। इन दोनों प्रक्रियाओं के तहत व्यक्ति अपने धर्म के प्रति अधिकाधिक केंद्रित हुआ है और अपने मूल धार्मिक विश्वासों को पुन: स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।
2. वैश्वीकरणजनित पहचान के संकट ने लोगों को पहचान की तलाश में अपने धर्म की ओर उन्मुख किया है परिणामत: धार्मिक रूढ़िवाद और धार्मिक पुन:प्रवर्तनवाद निरंतर मजबूत हो रहा है और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया कमजोर हुई है।
3. धर्म के आधार पर होने वाले सांप्रदायिक तनाव, संघर्ष एवं दंगे भी धार्मिक भावना को भड़काकर अपने धर्म के प्रति लोगों को और अधिक रूढ़िवादी बना रहे हैं। गुजरात दंगे तथा हाल ही में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुए दंगे जैसी सांप्रदायिक घटनाओं ने धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित किया है।
4. भारत में राजनैतिक दलों द्वारा सत्ता प्राप्ति हेतु अपने पक्ष में मतों को लामबंद करने हेतु धर्म का प्रयोग, अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण आदि घटनाओं ने धर्म के महत्त्व को बढ़ाकर धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित किया है।
5. भारत में विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा सामाजिक क्षेत्र यथा शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में किए गए प्रयासों ने धर्म के महत्त्व और धार्मिक विश्वासों को मजबूत बनाकर धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित किया है।

   वैश्वीकरण और इससे उत्पन्न प्रतिस्पर्धा से वर्तमान समय में उत्पन्न तनावों से मुक्ति प्रदान करने हेतु धर्म की भूमिका और पहचान के संकट के समाधान में धर्म का महत्त्व, धर्म के समकालीन प्रकार्यों को दर्शाता है जो धर्म की निरंतरता बनाए रखने और धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित करने की दिशा में उल्लेखनीय घटनाएँ हैं।
6. वर्तमान में बाजार की शक्तियों द्वारा धार्मिक विश्वासों व मान्यताओं का बाजारीकरण, धार्मिक चैनलों की भरमार (आस्था, साधना, संस्कार) आदि ने भी धर्म के प्रभाव में वृद्धि करके धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया को बाधित किया है।

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष / Evaluation and Conclusion

उपरोक्त समग्र विवेचन से स्पष्ट है कि समकालीन भारत में धर्मनिरपेक्षता की प्रक्रिया कई चुनौतियों का सामना कर रही है, इसके बावजूद यह प्रक्रिया सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में धर्म के अवैज्ञानिक प्रभावों के उन्मूलन और धर्म को अधिकाधिक वैयक्तिक घटना के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण रही है और इस रूप में इसने आधुनिक समाज के निर्माण को संपोषित किया है। आज राज्य के दैवीय अधिकार के सिद्धांतों को मान्यता प्राप्त नहीं है। विवाह एवं परिवार के निर्माण का उद्देश्य धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन नहीं रह गया है। स्तरीकरण की व्यवस्था के रूप में भारत में जाति व्यवस्था को वैधता प्रदान करने वाला धार्मिक आधार कमजोर हो गया है। सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में रूढ़िवादी मान्यताओं एवं कुरीतियों का उन्मूलन संभव हो पाया है।

स्पष्ट है कि समकालीन समाज पर धर्म का वैसा नियंत्रण नहीं रह गया है जैसा प्राचीन भारतीय समाज में विद्यमान था। आज हम संसार को रहस्यमयी धार्मिक विचारों के आधार पर परिभाषित नहीं करते और प्रकृति व जीवन के बारे में तथा उससे संबंधित समस्याओं के समाधान के बारे में वैज्ञानिक दृष्टि व तर्कयुक्त चिंतन पर जोर देते हैं। परंतु इसके साथ यह भी उल्लेखनीय है कि आज भी हम भारत को एक धर्मनिरपेक्ष आधुनिक समाज के रूप में पूर्णत: स्थापित नहीं कर पाये हैं। अनगिनत नए धार्मिक आंदोलन, अध्यात्मिक जीवन के नए स्वरूप तथा नए धार्मिक विचार (एस्कॉन, साई बाबा, निरंकारी बाबा, डेरा सच्चा सौदा आदि) जो पिछले कुछ दशकों में उभरे हैं; धार्मिक आधार पर होने वाला संघर्ष जो दुनिया के सभी देशों में कमोवेश मात्रा में एक महत्त्वपूर्ण समकालीन घटना बना हुआ है, धार्मिक आतंकवाद जो अब विश्व के समक्ष एक ज्वलंत समस्या (Burning Issues) के रूप में विद्यमान है आदि इस तथ्य को परिलक्षित करते हैं।

अत: निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि धर्मनिरपेक्षीकरण जो समकालीन आधुनिक समाज के निर्माण की एक प्रमुख प्रक्रिया है अभी भी अपेक्षित लक्ष्य से दूर है और जब तक इसको एक आंदोलन का रूप नहीं प्रदान किया जाएगा और इसके मार्ग में आने वाली चुनौतियों का तर्कयुक्त निदान नहीं होगा तब तक एक धर्मनिरपेक्ष आधुनिक भारत की परिकल्पना साकार नहीं हो पाएगी।

✪✪✪✪✪